



अनुक्रमणिका

ऐ वह व्यक्ति जो प्रसन्नता
की खोज में है।

यही वह मार्ग है।

प्रसन्नता के मार्ग का अंत

प्रसन्नता के मार्ग का अंत

ऐ वह व्यक्ति जो प्रसन्नता की खोज में है।

आप इस संसार में आने से पहले कुछ भी नहीं थे। जैसा कि ईश्वर ने कहा

। क्या मनुष्य याद नहीं करता कि हम उसे इससे पहले पैदा कर चुके हैं, जबकि वह कुछ भी न था। (मरियम-67)

फिर ईश्वर ने मिट्टी से, फिर पानी से पैदा किया। फिर आपको सुनने और देखने वाला बनाया। ईश्वर ने कहा । क्या मनुष्य पर ज़माने का ऐसा समय भी बीता है कि वह कोई ऐसी चीज़ न था जिसका उल्लेख किया जाता ? हमने मनुष्य को ऐसा मिश्रण वीर्य से पैदा किया, उसे उलटते-पलटते रहे, फिर हमने उसे सुनने और देखने वाला बना दिया। (अल दहर 1-2)

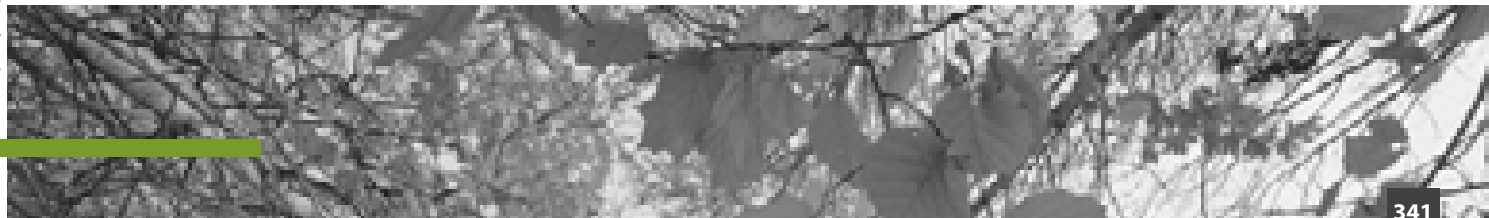
फिर आप धीरे-धीरे बलहीन से बलवान बन गये। लेकिन अंत में आपका परिणाम बलहीन होना है। ईश्वर ने कहा । अल्लाह ही है जिसने तुम्हें निर्बल पैदा किया, फिर निर्बलता के बाद शक्ति प्रदान की, फिर शक्ति के बाद निर्बलता और बुढ़ापा दिया। वह जो कुछ चाहता है पैदा करता है, वह जानने वाला, सामर्थ्यवान है। (अल रूम-54)

फिर निस्संदेह अंत मृत्यु है।

आपका इन स्थिति में एक कमजोरी से दूसरी कमजोरी की ओर परिवर्तन होते रहता है। आप स्वयं से कोई नष्ट दूर नहीं कर सकते। आप ईश्वर द्वारा स्वयं पर की गई अनुग्रह कि सहायता के बिना किसी प्रकार का लाभ नहीं उठा सकते। आप प्रकृति के अनुसार अन्य चीजों पर आधार रहते हैं। आप अपनी जीवन शाश्वत रखने में कई ऐसी चीजों क़ ज़रूरत मंद हैं, जो आपके बस के बाहर हैं। कभी आपको वो चीजें प्राप्त होजाती हैं, कभी आपसे छीन

लिये जाते हैं। कितनी ऐसी चीजें हैं जो आपके लिए लाभदायक हैं, आप उसको प्राप्त करना चाहते हैं। कभी आप उसको पाते हैं और कभी नहीं। कितनी ऐसी चीजें हैं जो आपके लिये नष्ट दायक हैं। आपकी इच्छाओं, और प्रयासों को नष्ट करने वाली है। आपके लिए समस्या और मुसीबतों का कारण है, आप इन चीजों को स्वयं से दूर करना चाहते हैं। कभी आप दूर करलेते हैं और कभी नहीं। क्या आप ईश्वर पर आधारित होने की भावना नहीं पाते हैं। ईश्वर यह कहता है - ऐ लोगों। तुम्हीं अल्लाह के मुहताज हो और अल्लाह तो निस्पृह, स्वतः प्रशंसित है। (फातिर-15)

आप वैरस से पीडित हो जाते हैं। इस वैरस को आप के आँख देख नहीं पाती। जो आपको बीमार करदेती है। आप स्वयं की सुरक्षा नहीं कर पाते। आप अपने जैसे कमज़ोर मानव के पास चिकित्सा के लिए जाते हैं, कभी वह सही औषध देता है और कभी वह असहाय होता है। तो पीडित और चिकित्सक दोनों भ्रम में रह जाते हैं। ऐ मानव तू कितना ही कमज़ोर है, अगर आप से मख्खी कोई चीज़ छीनले, तो आप उसको पुनः प्राप्त नहीं कर सकते हैं। ईश्वर ने सत्य कहा ऐ लोगों। एक मिसाल पेश की जाती है, उसे ध्यान से सुनो। अल्लाह से हटकर तुम जिन्हें पुकारते हो वे एक मख्खी भी पैदा नहीं कर सकते। यद्यपि इसके लिए वे सब इकट्ठे हो जायें और यदि मख्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले जाये तो उससे वे उसको छुड़ा भी नहीं सकते। बेबस और असहाय रहा चाहनेवाला भी (उपासक) और उसका अभीष्ट (उपास्य) भी। (अल-हज, 73)



जब आप स्वयं से मछली की खीची हुई चीज़ को बचा नहीं सकते, तो फिर आप अपनी किस चीज़ के मालिक हैं। आपका माथा ईश्वर के हाथ में है। आपकी जान उसी के हाथ में है। आपका दिल उसके दो उँगलियों के बीच में है, आपका जीवन और मृत्यु उसी के वश में है। आपकी प्रसन्नता और अप्रसन्नता उसी के आदेश से है। आपका चलना, फिरना, बोलना सब कुछ ईश्वर के अनुमति से है। आप उसी के आदेश से चलते हैं, और उसी के अनुमति से कर्म करते हैं। अगर वह आपको स्वयं ही को सौंपदे, तो आपको असाहयता, निर्बल, और पाप की ओर सौंपने के समान होगा। अगर वह आपको किसी और को सौंपदे, तो उस व्यक्ति की ओर सौंपने के समान होगा, जो आपके लिए, लाभ, कष्ट, जीवन, मृत्यु और दुबारा उठाये जाने का मालिक नहीं होता है। इसी कारण ईश्वर से आपको पल भर के लिए भी कोई दूसरा साधन नहीं है। बल्कि आप आंतरीय और बाह्य रूप से जीवन भर ईश्वर पर आधारित हैं। जो आप पर अपनी अनुग्रह निछावर करता है। जबकि आप हर प्रकार से ईश्वर के आवश्यकता के बावजूद पाप और बुरे कामों से उसका उल्लंघन करते हैं। निश्चित रूप से आपने उसे भुला दिया, जबकी आपको उसी की ओर लौटना है, और उसी के सामने खड़ा होना है। ऐ मानव अपने पापों का बोझ उठाने से असहाय और निर्बल होने का कारण अल्लाह चाहता है कि तुमपर से बोझ हलका करदें, क्योंकि इनसान निर्बल पैदा किया गया है। (अननिसा, 28)

ईश्वर ने रसूलों को भेजा, पुस्तकें अवतरित की, नियम लागू किये। आपके सामने सीधा मार्ग बनाया। सबूत, प्रमाण, और निशानियाँ प्रदान की यहाँ तक कि हर विषय में आपके लिए एक निशानी रखी, जो ईश्वर की एकीकरण और पूज्य प्रभु होने का खुला सबूत है। इन सब बातों के साथ-साथ आप कुछ लोगों को देखेंगे जो सत्य को असत्य से मुकाबला करते हैं। शैतान या किसी और को ईश्वर के अतिरिक्त अपना



दोस्त बनाते हैं और असत्य के प्रति झगड़ते हैं। हमने लोगों के लिए इस खुरआन में हर प्रकार के उत्तम विषयों को तरह-तरह से बयान किया है, किन्तु मनुष्य सबसे बढ़कर झगड़ालू है। (अल-कहफ-54)

क्या आप ईश्वर की सारी वो अनुग्रहें भूल गये जिसमें आप रात-दिन बिताते हैं। क्या आपको याद नहीं कि आप गंदे पानी से पैदा किये गये हैं। आप का अंतिम स्थान खबर (समाधी) है। आपको स्वर्ग या नर्क की ओर लौटना है। क्या (इनकार करनेवाला) मनुष्य ने देखा नहीं कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया ? फिर क्या देखते हैं कि वह प्रत्यक्ष विरोधी, झगड़ालू बन गया। और उसने हम पर फबती कसी और अपनी पैदायिश को भूल गया। कहता है, कौन हड्डियों में जान डालेगा जबकि वे जीर्ण-शीर्ण हो चुकी होंगी। कह दो, उनमें वही जान डालेगा जिसने उनको पहली बार पैदा किया। वह तो प्रत्येक सृष्टि (मखलूक) को भाली-भाँती जानता है। (यासीन, 77-79)

ईश्वर ने कहा ऐ मनुष्य। किस चीज़ ने तुझे अपने उदार प्रभु के विषय में धोके में डाल रखा है। जिसने तेरा प्रारूप बनाया, फिर नख-शिख से तुझे दुरुस्त किया और तुझे संतुलन प्रदान किया। (अल-इनफितार 6-7)

ऐ मनुष्य। तू क्यों स्वयं को ईश्वर के एकीकरण और उसकी महानता की रुची से वंचित रखता है। यह रुची ईश्वर के सामने खड़े होकर विनती करना है, ताकि वह तुम्हें गरीबी से मुक्ति दिलाये। बीमारी से स्वास्थ्य प्रदान करे, आपके दुख दूर करें आपके पाप क्षमा करें। आपको कष्टों से दूर रखें, अगर आप अन्याय से पीड़ित हो तो आपकी सहायता करें। अगर आप भ्रम या पथ भ्रष्ट से पीड़ित हो तो आपका मार्ग निर्देशन करें। अगर आप अज्ञान हो तो आपको ज्ञान प्रदान करें। जब आप डरने लगे तो आपको सुख दे। आप निर्बल हो तो आपके साथ दया करें। आपके शत्रुओं को आपसे दूर रखें और आपको रोज़ी दें। ऐ मनुष्य: धर्म

की अनुग्रह के बाद मानव पर ईश्वर द्वारा होने वाली सबसे महत्वपूर्ण अनुग्रह बुद्धि है। ताके वह लाभदायक और नष्ट दायक चीजों के बीच अंतर करे। वह ईश्वर द्वारा मिलने वाले आदेश व निशेध को समझे और वह सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य का ज्ञान प्राप्त करे। वह लक्ष्य एक ईश्वर की बंदगी (उपासना) है। जिसका कोई साझी नहीं। तुम्हारे पास जो भी नेमत है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ पहुँचती है तो फिर तुम उसी के आगे चिल्लाते और फरियाद करते हो। फिर जब वह उस तकलीफ को तुमसे टाल देता है तो क्या देखते हैं कि तुमसे कुछ लोग अपने रब के साथ साझीदार ठहराने लगते हैं। (अल-नहल, 53-54)

ऐ मनुष्य। निश्चय बुद्धिमान मानव उच्च चरित्र से प्रेम करता है और तुच्छ आचार न पसंद करता है। यह चाहता है कि ईश्वर के रसूलों और धर्मपरायणों में से हर अच्छे व्यक्ति का पालन करे। उसके मन में यह इच्छा होती है कि वह उनमें मिल जायें, हालांकि वह उन्हें पा नहीं सकता। इसका मार्ग वही है जिस कि ओर ईश्वर ने अपनी वाणी में मार्ग दर्शन किया है। कह दो, यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा करदेगा। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है। (आले-इमरान, 31)

जब मनुष्य उसका पालन करेगा, तो ईश्वर उसको नबी, रसूल, शहीद और अच्छे लोगों के साथ करदेता है। ईश्वर ने कहा। जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करता है, तो ऐसे ही लोग उन लोगों के साथ हैं जिनपर अल्लाह कि कृपादृष्टि रही है, वे नबी, सिद्दीक, शहीद और अच्छे लोग हैं। और वे अच्छे साथी हैं। (अल-निसा, 69)



ऐ मनुष्य। मैं तुझे यह सलाह देता हूँ कि तू एकांत में बैठ जा, फिर जो सत्य तेरे पास आया है उसमें विचार कर। इस सत्य के प्रमाणों में गौर कर। अगर तू इसको वास्तविक रूप से सत्य समझ रहा है, तो इसका अनुपालन प्रारंभ करदे, परमपराओं और समाज का बंदी न बन। यह जानले कि तेरे साथियों, बन्धुओं और पुर्षों की विरासत से अधिकतर प्रभुत्व स्वयं तेरा व्यक्तित्व है। ईश्वर ने इसी बात कि सलाह काफिरों को दी और इस ओर प्रोत्साहित किया। ईश्वर ने कहा। कहो, मैं तुम्हें बस एक बात की नसीहत करता हूँ कि, अल्लाह के लिये दो-दो और एक-एक करके उठ खड़े हों, फिर विचार करो, तुम्हारे साथी को कोई उन्माद नहीं है। वह तो एक कठोर यातना से पहले तुम्हें सचेत करनेवाला है। (सबा, 46)

ऐ मनुष्य। जब तो स्वयं का अनुसरण करदे, तो कदापि तुझे कोई नष्ट नहीं होगा। ईश्वर ने कहा। उनका क्या बिगड़ जाता यदि वे अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाते और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते। अल्लाह उन्हें भली-भाँती जानता है। (अल-निसा, 39)

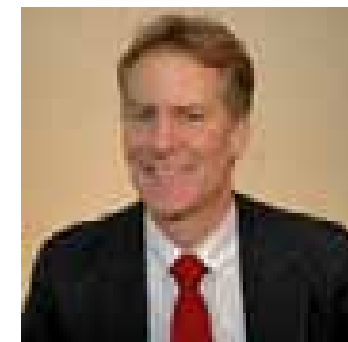
यानी अगर वह ईश्वर पर विश्वास रखलें, और ईश्वर की अवतरित की हुई बातों को मानलें, तो उसका क्या नष्ट होगा। अगर वह अच्छे कार्य करनेवाले के लिए अन्तिम दिन में पुण्य कि आशा रखते हुए ईश्वर पर यखीन रखले तो उसका क्या घाटा होगा। अगर वह ईश्वर कि दी हुई चीजों को उसकी इच्छा के अनुसार खर्च करदें तो उसका क्या नष्ट होगा। ईश्वर उनकी अच्छी और बुरी आशा को जानता है। इसका भी ज्ञान उसको प्राप्त है कि कौन इनमें से सुधार के खाबिल है, तो वह

वह मुझे मुझ से अधिक जानता है

खुरआन महान पुस्तक ने अपनी शक्ति से मुझे बंधी बनादिया। मेरे दिल का मालिक बन गया। ईश्वर के सामने आत्मसमर्पण करने वाला बना दिया। खुरआन आखरी लम्हे तक अपने पढ़ने वाले के लिए लाभ दायक है। इस प्रकार कि खुरआन को पढ़ने वाला अपने भीतर प्रजापति ईश्वर के सामने तन्हा खड़े होने की भावना पाता है। जब आप खुरआन को गंभीरता से लेंगे, तो आप के लिए साधारण रूप से इसको पढ़ना संभव नहीं होगा। खुरआन आप पर इस तरह प्रभावित हो जायेगा, जैसे आप पर उसका कोई अधिकार हो। वह आप से बहस करेगा, आपको शरमिन्दा करेगा, आपको चुनौती देगा। मैं एक दूसरे पक्ष पर खड़ा था। फिर मुझे यह ज्ञान हुवा कि खुरआन का अवतरित करने वाला मुझे मुझ से ज्यादा जानता है। खुरआन सदा मेरे विचारों से आगे रहता था। वह मेरे प्रश्नों का उत्तर देता है। हर रात मैं अपने प्रश्नों को अपने दिमाग में रखता था, लेकिन दूसरे दिन मुझे इसके उत्तर मिल जाते थे। मैंने खुरआन के पन्नों में साफ-साफ अपने आप को पाया है।

जेवरी लॉग

अमेरिकन गणित अध्यापक



उसको सुधारता है और उसको मार्गदर्शन की ओर लेजाता है, उसको ऐसे अच्छे कार्य करने के खाबिल बनाता है जिससे वह संतुष्ट हो जाता है। ईश्वर यह जानता है कि कौन अपमान के खाबिल है, और कौन उसके प्रभुत्व दरबार से धुत्कार दिये जाने के लायक है। यह वह दरबार है, जो इस से धुत्कार दिया जाता है, निश्चय वह संसार और परलोक में घाटा उठाने वाला है।

निस्संदेह आप अगर इस्लाम स्वीकार करलें तो, इस्लाम आप के और आपकी इच्छाओं के बीच, या ईश्वर द्वारा वैध की हुई चीजों के उपयोग करने के बीच आड़ नहीं बनता। बल्कि ईश्वर आप के हर उस कार्य पर आपको पुण्य प्रदान करेगा, जो आप ईश्वर की खुशी प्राप्त करने के कारण करते हो। चाहे वह कार्य आपके संसारिक जीवन के लिए उपयुक्त हो, और आपके धन, स्थिती या सम्मान के अधिक होने का कारण हो। बल्कि वह वैध चीजें आप इस खयाल से अपने उपयोग में लाते हो, कि आप अवैध से दूर रहकर केवल वैध ही का उपयोग करेंगे, तो आपको इस पर भी ईश्वर द्वारा पुण्य मिलेगा।



ऐ मनुष्य। निश्चय ईश्वर के रसूल सत्य लेकर आये, और ईश्वर के संदेश को पहुँचाए। मनुष्य को ईश्वर की भेजी हुई शरियत (धार्मिक नियम) का ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है, ताकि वह संसारिक जीवन दूरदर्शिता के साथ यापन करे, और परलोक में सफलता प्राप्त करनेवाला बने। ईश्वर ने कहा। ऐ लोगों। रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य लेकर आ गया है। अतः तुम उस भलाई को मानो जो तुम्हारे लिये जुटाई गयी है और यदी तुम इन्कार करते हो तो आकाशों और धरती में जो कुछ है, वह अल्लाह ही का है। और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, तत्त्वदर्शी है। (अल-निसा, 170)

ईश्वर ने कहा। कह दो, ऐ लोगों। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य आ चुका है। अब जो कोई मार्ग पर आयेगा तो वह अपने ही लिए मार्ग पर आयेगा और जो कोई पथ भ्रष्ट होगा तो वह अपने ही बुरे के लिये पथभ्रष्ट होगा। मैं तुम्हारे ऊपर कोई हवालेदार तो हूँ नहीं। (यूसुस-108)

ऐ मनुष्य। अगर तू इस्लाम स्वीकार करलें तो स्वयं आप का लाभ है। अगर आप इस्लाम का तिरसकार करें, तो स्वयं आप का नष्ट है। ईश्वर को आप की प्रार्थना की आवश्यकता नहीं। क्योंकि पापियों के पाप से कोई नष्ट और आज्ञाकारिताओं की आज्ञाकारी से कोई लाभ ईश्वर को नहीं है। कदापी ईश्वर के ज्ञान के बिना कोई पापी पाप नहीं कर सकता और उसकी आज्ञा के बिना कोई आज्ञाकार नहीं बन सकता। ईश्वर ने कहा।



तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से आँख खोल देनेवाले प्रमाण आ चुके हैं, तो जिस किसी ने देखा, अपना ही भला किया और जो अन्धा बना रहा तो वह अपने ही को हानि पहुँचायेगा। और मैं तुम पर कोई नियुक्त रखवाला नहीं हूँ।
(अल-अनआम, 104)

निश्चय ईश्वर ने कहा, जैसा की उसके रसूल ने हमें सूचना दी है: ऐ मेरे बन्दों मैंने अपने आप पर अन्याय को अवैध समझा है। इसको तुम्हारे बीच भी अवैध टहराया है। तुम आपस में एक-दूसरे के साथ अन्याय मत करो। ऐ मेरे बन्दों तुम सब गुमराह हो, केवल वह व्यक्ति गुमराह नहीं है जिसका मैंने मार्गदर्शन किया हो। परन्तु तुम मुझसे मार्गदर्शनी की प्रार्थना करो, तो मैं तुम्हें सीधे पथ की ओर मार्गदर्शन करूँगा। ऐ मेरे बन्दों तुम सब भूके हो। केवल उस व्यक्ति के अतिरिक्त जिसको मैंने खिलाया है। परन्तु तुम मुझसे भोजन माँगो, मैं तुम्हें खिलाऊँगा। ऐ मेरे बन्दों तुम निर्वस्त्र हो। केवल उस व्यक्ती के अतिरिक्त जिसको मैंने वस्त्र प्रदान किया। परन्तु तुम मुझ से वस्त्र माँगो मैं तुम्हें दूँगा। ऐ मेरे बन्दों तुम रात, दिन पाप करते हो, मैं तुम्हारे सारे पाप क्षमा करता हूँ, परन्तु तुम मुझसे क्षमा चाहो, मैं तुम्हें क्षमा करूँगा। ऐ मेरे बन्दों कदापी तुम्हारे भीतर इतनी क्षमता नहीं कि तुम नष्ट पहुँचा सको, और न इतनी क्षमता है कि तुम मुझे लाभ पहुँचा सको। ऐ मेरे बन्दों अगर तुममें से प्रथम और अंतिम व्यक्ति, मनुष्य और जिन्न सारे के सारे किसी एक अधिकतर धर्म प्रायणत व्यक्ति के समान हो जायें, तो भी इस से मेरे राज्य में कोई वृद्धि नहीं होगी। ऐ मेरे बन्दों अगर तुममें से प्रथम और अंतिम व्यक्ति, मनुष्य और जिन्न



पश्चीमी सभ्यता की गहराई

जिस व्यक्ति ने पश्चीमी सभ्यता की गहराई देखा हो। उसकी सारे विषयों का ज्ञान प्राप्त किया हो। इस सभ्यता को ज्ञानिक और वास्तविक रूप से अच्छी तरह परखा हो। तो वह अन्तरीक आत्मा की शक्ती से इस्लामिक सिद्धांत के सामने समर्पण करता है। ताकि इस सिद्धांत द्वारा अपनी प्यास बुजाये।

नसीम सोसह

ईराख का यहूदी लेकचरर

सारे के सारे किसी एक अधिकतर पापी के समान हो जायें, तो भी मेरे राज्य में कोई कमी नहीं होगी। ऐ मेरे बन्दों अगर तुममें से प्रथम और अंतिम व्यक्ति, मनुष्य और जिन्न सारे के सारे एक प्लाटफ़ॉर्म पर इकट्ठा हो जायें, और मुझसे माँगो, तो मैं हर व्यक्ति की इच्छा पूरी करूँगा। इस से मेरे खज़ाने में बिल्कुल उसी समान कमी होगी, जिस समान कि सूई से समुद्र में होती है। ऐ मेरे बन्दों तुम्हारे इन कार्यों की संख्या मेरे पास है। फिर मैं तुम्हें इसका पूरा-पूरा बदला दूँगा। जो अच्छा बदला पाले, वह ईश्वर कि प्रशंसा करे, और जो बुरा बदला पाये, वह स्वयं अपने आप को दोशी टहराये। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है)

ऐ मनुष्य यही वह मार्ग है, इसके अतिरिक्त संसार और परलोक में प्रसन्नता के लिये कोई और मार्ग नहीं। सारे अन्य मार्ग अप्रसन्नता, दुख और विनाश के मार्ग हैं। ईश्वर ने कहा। और यह कि यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर चलो और दूसरे मार्गों पर न चलो कि वे तुम्हें उसके मार्ग से हटाकर इधर-उधर करदेंगे। यह वह बात है जिसकी उसने तुम्हें ताकीद की है ताकि तुम (पथभ्रष्टता से) बचो।

(अल-अनआम, 153)

जो व्यक्ति प्रसन्नता का मार्ग चले, वह प्रसन्नता प्राप्त करलेगा। जो व्यक्ति दूसरे अन्य मार्ग चले, वह भटक जायेगा। ईश्वर के मार्ग से दूर हो जायेगा, और कभी प्रसन्नता के मार्ग को प्राप्त नहीं कर सकेगा।



प्रसन्नता और शांति के स्तंभ

वर्तमान काल में पश्चिम मुहम्मद कि तत्वदर्शता का ज्ञान प्राप्त करने लगा है। उनके धर्म से प्रेम करने लगा है। इसी प्रकार पश्चिम मध्यकाल में अपने कुछ वैज्ञानिकों की ओर से लगाये गये आरोपों से इस्लामी सिद्धांत को आज़ाद किया है। मुहम्मद का धर्म ही वह विधी होगा जिस पर प्रसन्नता और शांति आधारित होगी। इसी धर्म के दर्शन ही पर सारी समस्याओं और दुविधाओं का समाधान है।

बरनार्ड शाह

ब्रिटिश लेखक



यही वह मार्ग है।

हर न्याय प्रिय बुद्धिमान, चाहे वह ऊपरी इंकार करे, यह जानता है कि यही शाश्वत प्रसन्नता का मार्ग है। और वह उस समूह के समान है, जिनके पास चमत्कारों के आजाने के बाद भी उन्होंने मूसा को ईश्वर का नबी मानने से इंकार किया, इनके बारे में ईश्वर ने यह कहा। उन्होंने जुल्म और सरकशी से उनका इनकार कर दिया, हालांकि उनके जी को उनका विश्वास हो चुका था। अब देखलो इन बिगाड़ पैदा करनेवालों का क्या परिणाम हुआ। (अल-नमल, 14)

बहुत से बुद्धिमान न्याय प्रिय (चाहे वे इस्लाम न लाये हो) यह जानते हैं कि इस संसार और परलोक में सारी मानवता की प्रसन्नता का यही एक मार्ग है। यही वह मार्ग है जिसको हर स्वतंत्र व्यक्ति स्वीकार करता है, जो अपने विचारों को प्रकट करने में धैर्यवान हो, चाहे उसका मुँह बंद करने का प्रयास किया जाय। उसको अपने प्राण का, लोगों का, नये विषय को स्वीकार करने का, या अफ़हायें और पुरानी छवी का डर इस व्यक्ति को इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लेने से नहीं रोकता है। कितने ऐसे लोग हैं जिनको कायर और सामाजिक संबन्धों ने प्रसन्नता के मार्ग पर चलने से रोके रखा। ईश्वर ने कहा। अतः तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझी से डरो यदि तुम ईमान वाले हो। (आले इमरान, 175)

यही वह मार्ग है। हाँ यही प्रसन्नता, सम्मानता, दयालुता, ज्ञान, सभ्यता और नैतिकता का मार्ग है। चाहे इसमें कुछ कठिनाइयाँ हों। यही जीवन का नियम, और सच्चे की झूठ से संवीक्षा करना है। ईश्वर ने कहा। जिसने बनाया मृत्यु और जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा करें कि तुम में कर्म कि दृष्टि से कौन सबसे अच्छा है। वह प्रभुत्वशाली, बड़ा क्षमाशील है। (अल-मुल्क, 2)

यही वह मार्ग है, जिस पर पिछले रसूल और नबी चले मुहम्मद के साथी और अन्य जात, भाषा, रंगवालों में से उनके आज्ञाकारी चले। यही वह मार्ग है जो बहुत जल्द संसार का शासक संभालेगा। ईश्वर के रसूल ने कहा: जहाँ तक रात और दिन पहुँचेंगे, वहाँ तक यह संदेश (इस्लाम धर्म) पहुँचेंगे। जल और थल के हर गृह में ईश्वर आदरणीय को सम्मान के द्वारा, और अनादर को अपमान के साथ यह धर्म पहुँचायेगा। यह वह सम्मान है जिससे ईश्वर इस्लाम धर्म को सम्मानजनक बनाता है। और वह अपमान है जिससे ईश्वर काफिर (नन मुस्लिम) को अपमानजनक बनाता है। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया है।) तो आप शाश्वत प्रसन्नता के इस मार्ग पर चलनेवाले पवित्र समूह के साथ मिलजाओ।

यही वह मार्ग है। यही सफलता है। यही वह प्रसन्नता है, जिस पर चलनेवाले का मन सुख से भरा होता है। आप स्वयं को वंचित न रखो, और न स्वयं के साथ अन्याय करो। आप स्वयं के साथ अन्याय करने से बचो और प्रसन्नता के मार्ग पर चलो। ईश्वर ने कहा।



दिलों को बन्धी बानाता है

मैंने विभिन्न धर्मों की पढ़ाई की, तो यह परिणाम मिला कि इस्लाम ही वह धर्म है, जो इस पर विश्वास रखने वाले और न रखने वाले दोनों पर एक-समान प्रभावी होता है। इस्लाम कि महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह मानवता के दिलों को एक-दम से बन्धी बनालेता है। इसी कारण इस्लाम में अजीब जादू और आकर्षण है, जो मुस्लिमों के अतिरिक्त दूसरों को भी आकर्षित करता है।

मैरी ओलवर

अमेरिकन कवी



संसार के साथ
चलना चाहिए

सारे इतिहास में इस्लाम धर्म का फैलाव उसकी एक विशेषता है। इसलिए की इस्लाम प्रकृति का धर्म है, जो मुस्तफा (मुहम्मद) के मन पर अवतरित हुआ है।

डॉक्टर मोराद होमान

जर्मनी राजदूत

सदा रहने वाली प्रयोजना

डॉक्टर मुराद होवमान
जर्मनी राजदूत



इस्लाम सदा रहने वाली परियोजना का वह जीवन है जो न कभी पुराना पड़ता है, और न उसकी क्षमता समाप्त होती है। जब कुछ लोगों ने इसको प्राचीन काल में देखा हो, तो वही इस्लाम आज भी है और भविष्य काल में रहेगा। समय या स्थान में वह सीमित नहीं है। वह कोई विचारों की लहर या फैशन नहीं है कि उसका इंतजार संभव हो। आज तक भी यह कहावत रोशनी प्राचीन काल से आयेगी बिल्कुल सही है।

आध्यात्मिकता को सुधारो

जेवरी लांग
अमेरिकन गणित अध्यापक



मेरे जीवन के एक विशेष लम्हे में ईश्वर ने मुझ पर अपने उपकारों और दयालुता कि भरमार की। जबकि मैं कष्ट और बाधा से अंतरिक रूप से पीड़ित था। मेरे भीतर आध्यात्मिकता को सुधारने की पूरी क्षमता थी। किन्तु मैं मुस्लिम बनगया। इस्लाम से पहले मेरे जीवन में प्रेम का कोई मतलब नहीं था। लेकिन जब मैंने खुरआन पढ़ा, तो मेरे अंदर दयालुता की भावना अधिक हो गई। मैं अपने मन में सदा प्रेम कि भावना से प्रभावित होने लगा। इसी कारण ने मुझे इस्लाम की ओर ले आया। वह कारण ईश्वर का प्रेम है जिसका मुकाबला नहीं किया जा सकता।

जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन करायेंगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे। (अल-नहल, 97)

यही वह मार्ग है। इसको पकड़े रहो। इससे अपने आपको भाग्यशाली बनाओ। अपने सांसारिक जीवन को सुख और खुशी से यापन करो। यह न भूलो ईश्वर के पास मिलनेवाली चीज़ें मूल्यवान और शाश्वत हैं। परलोक का सुख ही शाश्वत सुख है। निश्चय हमारे ईश्वर प्रभु ने इसका एक ही मार्ग बनाया है। वह संसार और परलोक की प्रसन्नता है। सारे अन्य मार्गों में संसार का नष्ट और परलोक में दण्ड है। ईश्वर ने कहा। और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोड़ा तो उसका जीवन तंग (संकीर्ण) होगा और क्रियामत के दिन हम उसे अन्धा उठावेंगे। वह कहेगा, ऐ मेरे रब। तुने मुझे अन्धा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखोंवाला था। (ता-हा, 124, 125)

ईश्वर ने यह भी कहा। वह कहेगा, इसी प्रकार (तू संसार में अन्धा रहा था) तेरे पास मेरी आयतें आयी थी तो तूने उन्हें भुला दिया था। (ता-हा, 126)

तुम इस मार्ग को भूलने या भुलाने का प्रयास करने से भी बचो। यह प्रसन्नता का मार्ग है।

यही वह मार्ग है जो सरल है। मन में ईश्वर के एकीकरण के सिद्धांत, शारीरिक अंगों से इस सिद्धांत के प्रकट होने से और सारे नबी और रसूलों पर विश्वास रखने से इस मार्ग

का प्रारंभ होता है। परलोक में शाश्वत प्रसन्नता से इसका अंत होता है। दो बातों की, यानी ईश्वर के अतिरिक्त किसी और के पूज्य प्रभु न होने और मुहम्मद के ईश्वर द्वारा रसूल होनेकि गवाही देने से प्रारंभ होता है। स्वर्ग में ईश्वर के दर्शन और रसूलों के साहचर्य होने कि प्रसन्नता पर इसका अंत होता है। अब तुम कहो: मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य प्रभु नहीं है, और मुहम्मद ईश्वर के रसूल हैं। सुखी जीवन यापन करो। भाग्यशाली बनकर मरो। अपनी समाधि से प्रसन्न उठते हुए शाश्वत बागों की ओर चलो। यही वह मार्ग है। अगर तुम इस पर नहीं चलते हो, तो रसूल का काम केवल खोल-खोल कर वर्णन करना है। ईश्वर ने कहा। किन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो जो कुछ दे कर मुझे तुम्हारे ओर भेजा गया था, वह तो मैं तुम्हें पहुँचा ही चुका। मेरा रब तुम्हारे स्थान पर दूसरी किसी कौम को लायेगा। और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। निस्संदेह मेरा रब हर चीज़ की देख-भाल कर रहा है। (हूद, 57)

अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पूज्य प्रभु नहीं है
मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं



जब आप अल्लाह को जान लें, उसके वजूद का विश्वास कर लें, तो इस्लाम आप से यह कहेगा कि ईश्वर गले की नस से भी अधिक आप से निकट है। इसीलिए आप के और ईश्वर के बीच किसी दलाल की आवश्यकता नहीं है। न किसी जोतिशी कि जरूरत है, जिस को आप (महान) स्विकार करलें, फिर वह आपकि तौबा खुबूल करे। या किसी ऐसे केन्द्र की आवश्यकता नहीं है कि केवल उसी के अंदर प्रार्थना पूर्ण होती हो।

डोनाल्ड रिकवेल
अमेरिकन कवी